ལྷོ་ཡིག་ ཀ་དཔེ་ དང་པོ།

भूटिया भाषा प्रवेशिका

BHUTIA PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ལྷོ་ཡིག་ ཀ་དཔེ་ དང་པོ།

भूटिया भाषा प्रवेशिका

BHUTIA PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)

Manasagangotri, Mysuru - 570 006

Ph: 0821 2515820 (Director)

email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi - 110016

Ph: 011 2696 2580

email: dceta.ncert@nic.in

ལྷོ་ཡིག་ ཀ་དཔེ་ དང་པོ།

भूटिया भाषा प्रवेशिका

BHUTIA PRIMER

A basal reader of Bhutia alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Aleendra Brahma
Milan Subba

ISBN: 978-81-19411-17-7

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A S
Cover Photo: Bhutia Language Resource Persons

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

स्वच्छ भारत

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

भारतवर्ष एउटा बहुभाषिक र बहुसाँस्कृतिक राष्ट्र हो। यहाँ विभिन्न क्षेत्रहरूमा बोलिने धेरै भाषाहरू छन्। हाम्रो राष्ट्रको साझा विशेषता के हो भने हामी हाम्रो मौखिक उच्चारणमा थुप्रै भाषाहरूको प्रयोग गर्नाका साथै यसको आनन्द लिने गर्छौं। यसले हामीलाई एकताको डोरीमा बलिष्ठ पाराले बाँधेर राख्दछ। NEP 2020 भारतको बहुभाषिक प्रकृति एउटा अति नै महत्त्वपूर्ण सम्पदाशक्ति हुनुका साथै राष्ट्रको सामाजिक-साँस्कृतिक, आर्थिक र शैक्षिक विकासको लागि कुशलतापूर्वक प्रयोग गर्नुपर्छ भन्ने विचारको गहिरो उदाहरण हो। यसले हरेक तहमा शिक्षाका बहुभाषिकतालाई वृद्धि गर्न सहयोग पुर्याउछ जसको फलस्वरुप विद्यार्थीहरूले आफ्नै भाषामा अध्ययन गर्ने अवसर प्राप्त गर्दछन्। सबै भारतीय भाषाहरूमा शिक्षण-सिप

सामग्रीहरू सिर्जना गर्नाले यसले बहुभाषिक सम्पदालाई बढाउँदै 'विकसित भारत' को दृष्टिमा अहम् योगदान पुर्‍याउँछ। NEP 2020 को अनुरूप प्रारम्भिक ग्रेड प्राइमरहरू विकास गर्न एउटा व्यापक र समावेशी दृष्टिकोण चाहिन्छ जसको सहयोगद्वारा भारतको प्रत्येक क्षेत्रमा अद्वितीय भाषिक र साँस्कृतिक विशेषताहरूलाई सम्बोधन गर्न सकिन्छ। प्रस्तुत प्राइमरहरूको उद्देश्य प्रारम्भिक कक्षाका विद्यार्थीहरूलाई पठन र लेखनमा प्रवीणता प्रदान गर्नु अनि रचनात्मकता र आलोचनात्मक सोचलाई बढावा दिनु हो। यी प्राइमरहरूले स्यासाना विद्यार्थीलाई वर्णहरूको संयोजनबाट बनाइएको अक्षरका एक वा बढी सेटहरूको अर्थ पनि परिचय गराउँदछ। जस्तै तिनीहरूको पाठमा निहित वर्णहरू आदि, मध्य र अन्त्यमा वर्णन गरिएका अक्षरहरू लेख्ने अनि त्यसलाई अभ्यास गर्दै ती शब्दसँग उदाहरण सहित परिचय प्रदान गरिन्छ। पाठमा रहेका शब्दहरूसँग मेल खाने गीतले विद्यार्थीहरूलाई उनीहरूका भाषाको प्रति विकास, संज्ञानात्मक कौशल र स्मरणशक्ति सुधार गर्न सहयोग गर्नेछ।

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निर्देशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Bhutia Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Co-Coordinator

Salam Brojen Singh, RP (Teaching) in Manipuri, North Eastern Regional Language Centre (NERLC), (CIIL), Guwahati

Member Co-Coordinators

Gayotree Newar, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati
Milan Subba, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati

Resource Persons

Passong Lhamu Bhutia, Academic Content Creator, Bhutia, Sikkim
Sonam Choyki Bhutia, Academic Content Creator, Bhutia, Sikkim

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, RP (Teaching) in Bodo, NERLC, (CIIL), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

भुटिया भाषा प्रवेशिका कसरी पढाउनुपर्छ

नयाँ राष्ट्रिय शिक्षा नीति, २०२० र राष्ट्रिय पाठ्यक्रम रूपरेखा, २०२२ को अन्तर्गत ३ देखि ८ वर्षसम्मका विद्यार्थीहरूलाई मातृभाषा, स्थानीय भाषा र क्षेत्रीय भाषामा शिक्षा दिने व्यवस्था मिलाएको छ। भारतको जनजाति बहुल क्षेत्रमा विद्यार्थीहरूले कक्षामा प्रदान गरिने शिक्षा प्रणालीलाई सहजै बुझ्दैनन् । जसले गर्दा विद्यालयमा शिक्षण प्रणाली प्रभावित भएको देखिन्छ। त्यसैले केन्द्रिय सरकारले ३ देखि ५ वर्षसम्मका विद्यार्थीहरूलाई प्राथमिक तहमा आधारभूत साक्षारता दिने व्यवस्था गरेको छ। यस शिक्षण प्रणालीमा स्थानीय गीत र लोककथाहरूका माध्यमबाट स्यासाना नानीहरूका मनमा रहेका मौनता अनि कुण्ठाहरूलाई पन्छाएर मौखिक भाषाको विकासमा जोड दिइएको छ। यो पुस्तक कार्य कथा, चित्र एवम् कुराकानीका माध्यमबाट गरिनुका साथै ध्वनि, वर्ण परिचय, पठन र लेखन अभ्यासका निम्ति भाषा सिकाउने पुस्तकको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ।

भुटिया भाषा प्रवेशिका पुस्तकद्वारा **भुटिया** भाषी विद्यार्थीहरूलाई आफ्नो मातृभाषा प्रति आकर्षण, बौद्धिक स्तर अनि सृजनशीलताका साथै कल्पना शक्तिलाई विकास गर्न सकिन्छ भन्ने हाम्रो धारणा छ। भारतीय परिपेक्षमा विशेषगरी पश्चिम बङ्गाल, सिक्किम, असम लगायत अन्य राज्यहरूमा हिन्दी र अङ्ग्रेजी भाषाका झै भुटिया भाषा शुद्धसँग पढ्ने क्षमताको विकास भएको भने खासै देखिन्न। यसका लागि प्राथमिक स्तरमा मौलिक साक्षरता (भुटिया पुस्तक) नरहनु पनि एउटा ठूलो कारण हो। हाम्रा नानीहरू पठन-लेखनमा हिन्दी तथा अङ्ग्रेजी भाषा पढ्न र लेख्न सहजै सक्छन् तर त्यहीँ हाराहारीमा भुटिया भाषा प्रति सचेत रहेको देखिन्न। यसका लागि हामी अभिभावकहरू पनि कहीँ न कहीँ जिम्मेवार छौं। जुन हाराहारीमा प्राथमिक तहमा अङ्ग्रेजी तथा हिन्दी भाषाका पुस्तकहरू उपलब्ध छन् त्यहीँ हाराहारीमा हाम्रा पुस्तकहरू भने उपलब्ध छैनन्। त्यसैले यस पुस्तकद्वारा केहीँ मात्रामा भए तापनि स्यासाना नानीहरूलाई मनोरञ्जनका माध्यमबाट भुटिया भाषा सिकाउने प्रयास गरिएको छ।

प्रस्तुत गरिएको **भुटिया भाषा प्रवेशिका**मा ཨ་ལི་བཞི། (स्वर), ཀ་ལི་ སུམ་ཅུ། (व्यञ्जनवर्ण)का साथै सुरुवाती केहीँ सङ्ख्याहरूलाई चित्र अनि गीतका माध्यमबाट विद्यार्थीहरूलाई बुझाउने प्रयास गरिएको छ। प्राथमिक स्तरका विद्यार्थीहरूका लागि यो पुस्तक तयार पारिएकाले यसमा रहेका शब्दहरू सक्दो सहज-सरल भाषा शैलीमा लेखिएको छ। यो पुस्तक भारत सरकारद्वारा निर्देशित प्राथमिक तहका विद्यार्थीहरूलाई आफ्नो मातृभाषा प्रति आकर्षणका साथै वर्ण, अक्षरहरूको पहिचान गर्नुमा औधी केन्द्रित रहेको छ।

निम्नलिखित भागमा यो पुस्तक कसरी प्रयोग गर्नुपर्छ भन्ने कुराको सामान्य जानकारी दिइएको छ -

ध्वनि परिचय- नानीहरूले पाठमा रहेको चित्र देख्नका साथै त्यसको नाम उच्चारण गर्छन् । चित्रको नाम कुन ध्वनिबाट सुरु भएको छ त्यो शिक्षकले विद्यार्थीलाई सोध्नुपर्छ। जस्तै- ཀན་ཚོང་། को चित्र देखेपछि यसको प्रारम्भ /ཀ་/ ध्वनिबाट भएको भनी नानीहरूले बुझ्दछन्।

वर्णमालाको परिचय-'ཀ་' वर्ण देख्नमा कस्तो हुन्छ शिक्षकले विद्यार्थीहरूलाई सिकाउँनु पर्दछ। साथै पाठ्यपुस्तकमा दिइएको कतिपय शब्दबाट 'ཀ་ ' वर्ण छानेर भन्न दिनुपर्छ। नानीहरूले तीन-चारवटा शब्दबाट ཀ་ ध्वनि उच्चारण गर्छन् र लेख्ने अभ्यास गर्दछन्।

पठन- विद्यार्थीहरूले चित्र हेरेर त्यहाँ रहेका शब्दहरूको नाम उच्चारण गर्छन्। त्यो शब्द देब्रेदेखि दाहिनेतिर निर्देश गरी छात्र-छात्राले ཀན་ཚོང་། शब्द पढ्दछन्। ཀ་ बाट प्रारम्भ हुने पाठमा अन्य शब्दहरू पढेर उनीहरूले ཀ་ वर्ण खोज्छन् र त्यसलाई कक्षामा दोहराउछन्। आदि, मध्य र अन्त्य स्थानमा /ཀ་/ ध्वनिको प्रयोगबारे शिक्षकले विद्यार्थीलाई भन्नु पर्दछ। /ཀན་ཚོང་།/ ध्वनि पढ्दै गर्दा शिक्षकले ཀན་ཚོང་། शब्दका साथै अन्य तीन-चारवटा शब्द बोर्डमा लेख्नु पर्दछ। यसरी कक्षमा एक एक गरेर सबै विद्यार्थीलाई बोलाएर पाठमा रहेका शब्दहरू पढ्न दिनु पर्दछ।

पाठमा रहेका अक्षर, चिह्न र शब्दहरू विद्यार्थीहरूका परिचित जगतबाटै सक्दो बटुलेका छौं। पाठ्य पुस्तकमा भएका चित्र हेरेर विद्यार्थीहरू शब्दसँग परिचित हुन्छन्। शिक्षकले एउटा शब्द बोर्डमा लेखेर त्यसमा रहेका प्रत्येक अक्षर एउटा एउटा गरेर उच्चारण गर्दै विद्यार्थी समक्ष भन्नु पर्दछ। त्यसरी उच्चारण गरिएका शब्दहरू संयोग गरी पढ्न सिकाउनु पर्दछ। कक्षामा उपस्थित एकजना छात्रले पाठमा रहेको एउटा शब्द उच्चारण गर्नु पर्दछ र अन्य विद्यार्थीले ऊसँग पुनरावृत्ति गर्दछन्। यसलाई 'सामुहिक पठन' भनिन्छ।

प्रत्येक पाठमा विद्यार्थीका लागि वर्ण वा अक्षर लेख्ने अभ्यास दिइएको छ। शिक्षकले विद्यार्थीहरूलाई पाठ अध्ययन गराउँदा सक्दो सहयोग गर्नु पर्दछ। शिक्षकले पाठको अभ्यासहरू गराउँदा **स्व-शिक्षण** र **सामूहिक शिक्षण** माथि ध्यान दिनु पर्दछ।

पाठमा रहेका गीतहरू बाहेक अन्य स्थानीय प्रचलित गीत, लोककथा आदि पनि शिक्षकले सङ्ग्रह गरी अभ्यास गराउनुपर्छ। यहाँ भएका चित्र बाहेक पनि अन्य चित्रहरू प्रदर्शन गर्नुका साथै त्यसलाई अभिनयको माध्यमबाट कक्षामा प्रस्तुत गर्ने सुविधा प्रदान गर्नुपर्छ। विद्यार्थीहरूका बौद्धिक चिन्तनको विकास हुनेगरी कतिपय अभ्यास दिएर शिक्षकले बढी मात्रामा अनुशीलन गराउनुपर्छ।

यस पाठ्य पुस्तकको भाषा र परिवेशका विषयवस्तु एक अर्कामा सम्पर्कित रहेको छ। त्यसैले यहाँ भाषा शिक्षाका साथै पाठअनुसार सम्बन्धित परिवेशको विषयहरू पनि सिकाउनुपर्छ। भुटिया भाषा प्रवेशिका पुस्तकमा रहेका सबै शब्द वा अक्षरहरू सक्दो शुद्ध र मानक रूपमा प्रस्तुत गरिने प्रयास गरिएको छ। तापनि कहीँ कतै *भुल* हुनु स्वाभाविक कुरा नै हो। त्यसैले यसमा रहेका *भुल* त्रुटिहरूलाई विज्ञजन, शिक्षकगण, शोधार्थी, पाठक, अभिभावकका साथै भाषाप्रेमीहरूले औँल्याइ दिनुहुन्छ भनी हामी आशावादी छौं। हजुरहरूको सुझावलाई हामी सकारात्मक रूपमा लिदैँ आगामी अङ्कमा यसमा रहेका त्रुटिहरूलाई अन्तर्भुक्त गर्नेछौं।

འོག་གི་ ཐིག་ཚད་ འདི་ཚོ་ ས་སྟོང་ན་ བྲི། :

དྲང་པོ་ ཐིག་ཚད། :

ཉལ་ ཐིག་ཚད། :

ཀྱབ་ཉལ་ ཐིག་ཚད། ༡ :

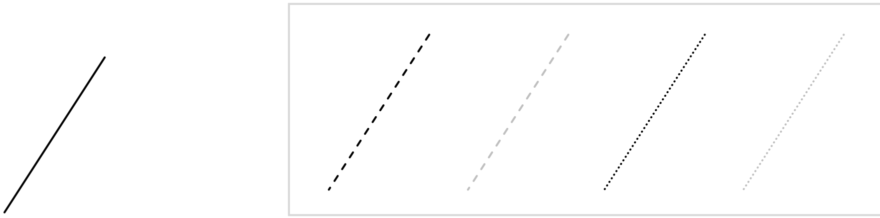

ཀྱབ་ཉལ་ ཐིག་ཚད། ༢ :

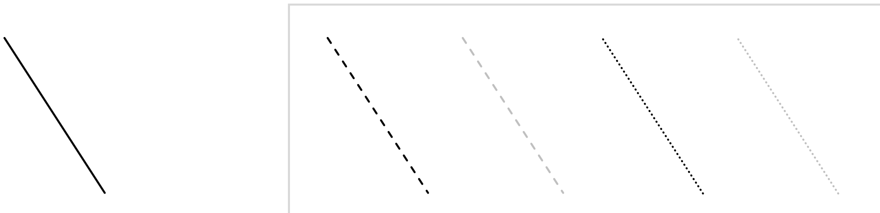

གུག་པ་ ཐིག་ཚད། ༡ :

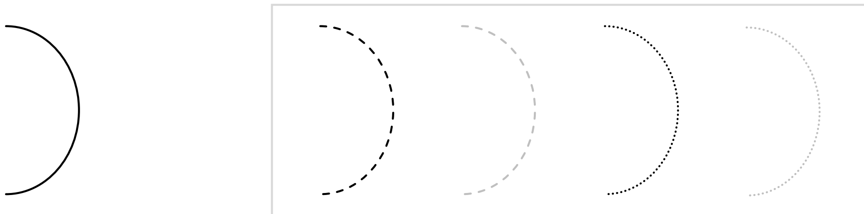

གུག་པ་ ཐིག་ཚད། ༢ :

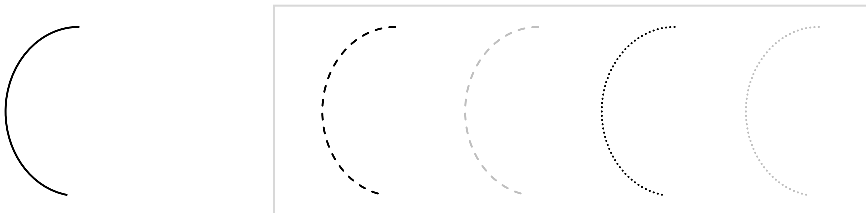

བརྗོད་ཐོ : སློབ་དཔོན་གྱི་ སློབ་ཕྲུག་ཚུ་ལུ་ ཞ་སྨྱུག་ བཤེད་སྟེ་ སྐབ་ཤད་ དང་ ས་སྟོང་ན་ ཡོད་པའི་ ཐད་ཚད་ འདི་ཚོ་ སྐབ་བྱིན་ དགོས།

ཨ་ལི་ བཞི།

(Vowel Letters)

◌ི ◌ུ ◌ེ ◌ོ

ཀ་ལི་ སུམ་ཅུ།

(Consonant Letters)

ཀ་	ཁ་	ག་	ང་	ཅ་
ཆ་	ཇ་	ཉ།	ཏ་	ཐ་
ད་	ན།	པ་	ཕ་	བ་
མ།	ཙ་	ཚ་	ཛ་	ཝ།
ཞ་	ཟ་	འ་	ཡ།	ར་
ལ་	ཤ་	ས།	ཧ་	ཨ།

ཀ་

ཀན་ཙོང་།

मकै

ཀ་ ལས་ ཀན་ཙོང་།
ཀན་ཙོང་གི་ ཟས,
ཀན་ཙོང་གི་ ཟས།
བཅུད་ཅན་ ཐོན་ཤད་ ཨིན།

ཀ་བོ།	खम्बा	དཀར་པོ།	सेतो रङ्ग	དབྱར་ཀ།	ग्रीष्म ऋतु

ཀ་ ཀ་ ཀ་

ཁ་

ཁྱིམ།

घर

ཁ་ལས་ ཁྱིམ།
ཁྱིམ་ ཆུང་ཆུང་།
ངའི་ཁྱིམ་ན་ ཨ་ལུས་ ཡོད།

ཁ་ཤ།	मृग	ཁ།	मुख	གནམ་ཁ།	आकाश

ཁ་ ཁ་ ཁ་

ག

ག་དུ།

इस्कुस

ག་ལས་ ག་དུ།
ཞིང་ནང་གི་ ག་དུ།
ག་དུ་ཀིས་ མདོག།
སྡོང་ཁུ་ འདུག།

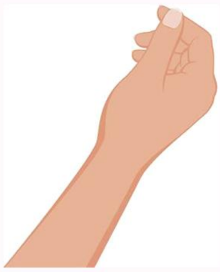

ག་ཧྲོན།	काक्रो	ལག་ཀོ།	हात	ཤ་མོག།	च्याउ

ག ག ག

ད

ཛས་སྦེ།

सिरानी

ང་ལས་ ཛས་སྦེ།
ཞལ་ཁྲི་ སྟེང་ལོ་ ཛས་སྦེ།
ཛས་སྦེ་ བཙུག་སྟེ་,
ཞལ་དོ་ ཨིན།

ངང་པོ།	हाँस	ཡང་གུད།	फर्सी	ཤིང་སྡོང་།	रूख

ད ད ད

ཙ་

ཙ་ན།

चना

ཙ་ལས་ ཙ་ན།
ཙ་ན་གྱི་ དཔལ།
ཙ་ན་གྱི་ དཔལ,
ཞིམ་པོ་ ཐོན་ཤད་ ཨིན།

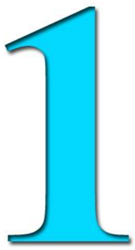

ཙ་ལག།	सामग्री	གཅིག།	एक	རྣམ་ཅོག།	कान

ཙ་ ཙ་ ཙ་

ཆ་

ཆུ།

पानी

ཆ་ ལས་ ཆུ།
ཆུ་ འཐུང་ དགོས།
ཆུ་ འཐུང་ན,
ལུས་ཁམས་ བདེ་ཐང་ ཡིན།

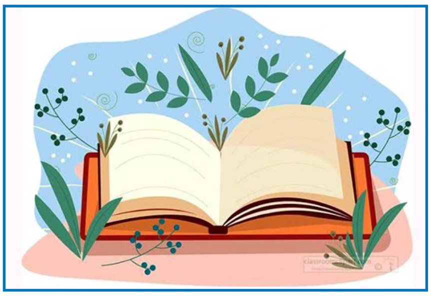

ཆར་པོ།	वर्षा	འཆམ།	नृत्य	དཔེ་ཆ།	किताब

ཆ་ ཆ་ ཆ་

ཛ་

ཛ།

चिया

ཛ་ལས་ ཛ།
ཨོམ་གིས་ ཛ།
ཨོམ་གིས་ ཛ,
ཞིམ་པོ་ ཐོན་ཤད་ ཨིན།

ཛ་ཚག།	छकनी	མཛལ་དར།	खदा	ལེན་ཛེ།	अलैंची

ཛ་ ཛ་ ཛ་

ཉ་

ཉ།

माछा

ཉ་ལས་ ཉ།
ཆུ་ ནང་གི་ ཉ།
ཉ་ཆུ་གིས་ རྒྱལ་མོ་ ཨིན།
ཆུ་ ཁོང་གི་ མི་ཚེ་ ཨིན།

2

ཉམ་ཏིག།	फटेङ्ग्रा	གཉིས།	दुई	ཉིམ།	घाम

ཉ་ ཉ་ ཉ་

ཏ་

ཏ་ག།

ओखर

འགྲུ་གེ་ འགྲུ་གེ་ གྲོགས་ཀོ་ཙུ།
ང་ཅག་ ནགས་ཚན་ འགྲུ་གེ།
ང་ཅག་ ནགས་ཚན་ འགྲུ་སྐེ།
ཏ་ག་ སྟོག་སྟེ་ འབག་ འོང་གེ།

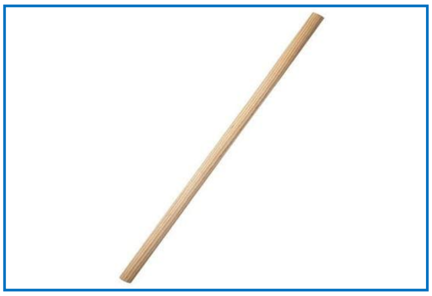

ཏེ་ཏག།	लौरो	མེ་ཏོག།	फूल	ཅན་ཏེ།	मेच

ཏ་ ཏ་ ཏ་

ཐ་

ཐག་ཀོ།

डोरी

ཐ་ ལས་ ཐག་ཀོ།
ཐག་ཀོ་ རིང་ཀོ།
ཐག་ཀོ་ཀིས་ སེམས་ཅན་,
སྡགས་ཏོ་ ཨིན།

ཐབ།	चूल्हो	མཐའ་སྐོར།	पर्यावरण	ལྕགས་ཐག།	सिक्री

ཐ་ ཐ་ ཐ་

ང་

དགོན་པོ།

गुम्बा

ང་ལས་ དགོན།
དགོན་པོ་ པདྨ་ཡངས་རྩེ།
པདྨ་ཡངས་རྩེ་ དགོན།
དགོན་ཆེན་ གཅིག་ ཨིན།

ངོམ།	भालू	བདུན།	सात	བརྒྱད།	आठ

ང་ ང་ ང་

ན་

ནག་པང་།

श्यामपट

ན་ ལས་ ནག་པང་།
འཛིན་གྲྭ་ ནང་གི་ ནག་པང་།
ནག་པང་ སྟེང་ལོ,
ཀ་ ཁ་ ག་ ང་ བྲི་ འདུག།

ནགས་ཚལ།	वनपाखा	གནམ་ཁ།	आकाश	མཆོད་རྟེན།	छोर्तेन

ན་ ན་ ན་

པ་

པད་མ་ མེ་ཏོག།

कमल

པ་ལས་ པདྨ།
པདྨ་ མེ་ཏོག།
པདྨ་ མེ་ཏོག,
ཆུ་ནང་ལོ་ སྐྱེ་ འདུག།

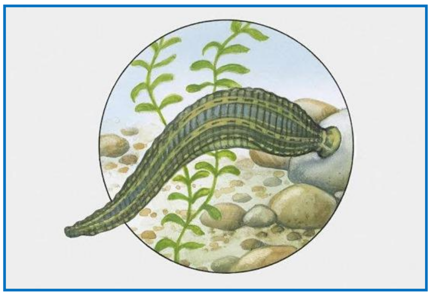

པད་པོ།	जुका	པ་པ་ལི།	मेवा	དམར་པོ།	रातो

པ་ པ་ པ་

ཕ

ཕ་མ།

आमा बाबा

ཕ་ལས་ ཕ་མ།
དྲིན་ཆེན་ ཕ་མ་
ང་ལོ་ བརྩེ་དྲགས་,
བྱིས་མཁན་ ཕ་མ་ ཨིན།

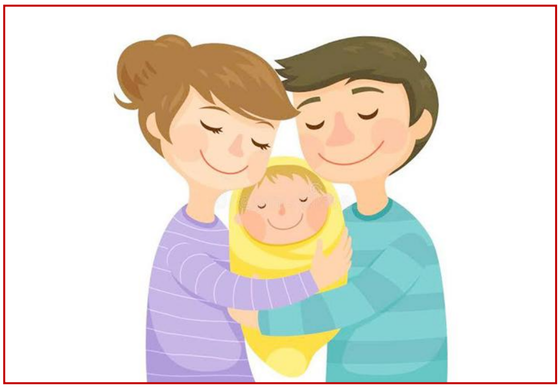

ཕག་གོ།	सुंगुर	ཕྱི་ཚམ།	साँझ	ནགས་ཕག།	बदेल

ཕ ཕ ཕ

བ་

བ།

गाई

བ་ལས་ བ།
བ་ཀྱི་ ཨོམ།
བ་ཀྱི་ ཨོམ,
འབྱིན་དོ་ ཨིན།

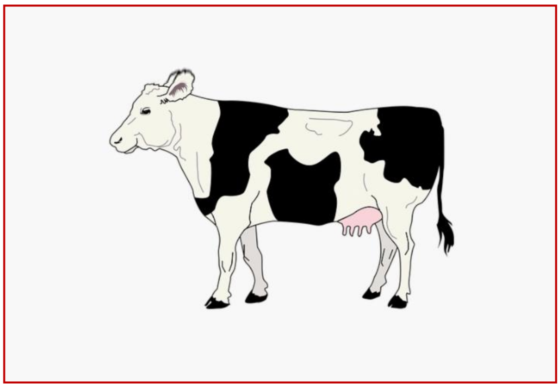

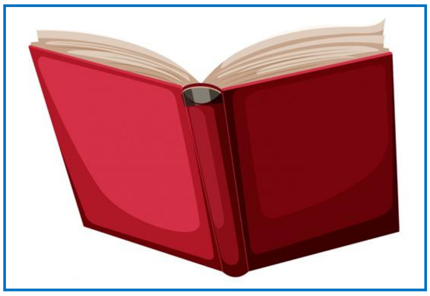

བེ་ཤེད།	अम्बक	སློབ་གྲྭ།	विद्यालय	དེབ།	किताब

བ་	བ་	བ་	

མ་

མགོ།

टाउको

སྒོར་རིལ་ མགོ་ནང་ ཀླད་པོ་ ཡོད།
རིག་གི་ བྱིན་མཁན་ ཀླད་པའི་ གཡོག།
སྒོར་རིལ་ མགོ་སྟེང་ ཚབ་ཚབ་ སྐྲ།
ཙང་དང་ མི་ཙང་ སྐྲ་ཡི་ གཡོག།

མེ་ཏོག།	फूल	ཞམ་བུ།	टोपी	འཆམ།	नृत्य

མ་ མ་ མ་

ཚ་

ཚན་དན།

धुप्पी

ཚ་ ལས་ ཚན་དན།
མ་ལ་ཡའི་ ཚན་དན།
ཚན་དན་གྱི་ དྲིམ།
ཉམས་ཞད་ མེད་པོ་ ཨིན།

ཚམ་པོ།	पिठो	གཚང་ཆུ།	खोला	ནེ་ཚོ།	सुगा

ཚ་ ཚ་ ཚ་

ཚོ་

ཚོ་ལུམ།

सुन्तला

གཟིགས་ཅེ་ གཟིགས་ཅེ་ གྲོགས་ཀོ།
ཡ་ཡོ་ གཟིགས་ཅེ་ གྲོགས་ཀོ།
ཡ་ཡོ་ དོང་ཕོང་ སྙིང་ལོ,
ཚོ་ལུམ་ ཀེས་པོ་ སྨགས་ འདུག།
ཚོ་ལུམ་ ཀེས་པོ་ སྐོགས་སྐི་ ང་ཅག་ རེ་རེ་ ཟ་གེ།

ཚང་།	गुँड	མཚོ།	ताल	ཁ་ཚ།	खोर्सानी

ཚོ་ ཚོ་ ཚོ་

ཛོ་

ཛོམ།

भाँड़ा

ཛོ་ ལས་ ཛོམ།
ཟམ་ བཙོ་སའི་ ཛོམ།
ཨ་མ་གྱི་ ཟམ་ ཞིམ་པོ།
བཟོ་བཞིན་ འདུག།

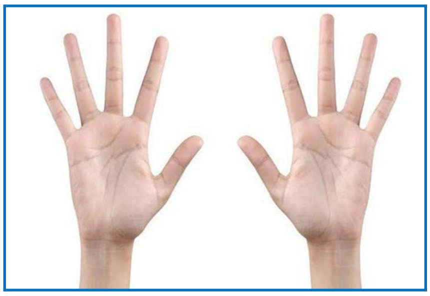

ཛོ་ཧྲོམ།	भालेमुङ्ग्रो	འཛམ་གླིང་།	पृथिवी	མཛུབ་མོ།	औंला

ཛོ་ ཛོ་ ཛོ་

ཝ་

ཝམ།

स्याल

ཝ་ ལས་ ཝམ་།
ཝམ་ ཚུང་ཚུང་ འདུག།
ཝམ་ ཁ་དོ་ ནང་ལོ་
འགྲུ་ བཞིན་ འདུག།

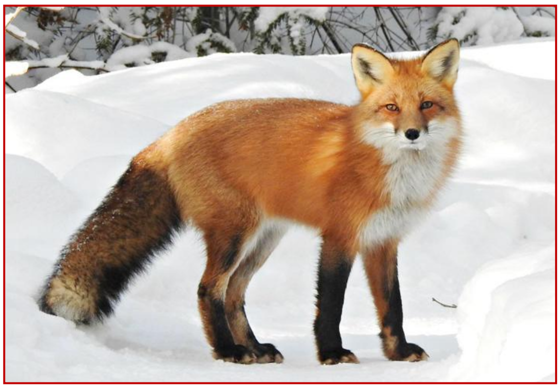

ཝུར་རྡོ།	घुएँत्रो	ཝའི་ཝའི།	वाइ-वाइ	ཝེཅ།	चील

ཝ་ ཝ་ ཝ་

ཞ་

ཞམ་བུ།

टोपी

ཞ་ ལས་ ཞམ་བུ།
མཐོ་རིག་ ཞམ་བུ།
ཨ་ཇོ་གིས་ ཞམ་བུ།
བཙུག་བཞིན་ འདུག།

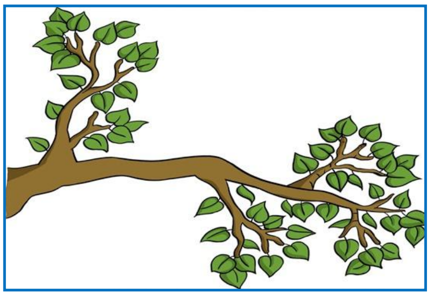

ཞ་ག།	शाखा	བཞི།	चार	ཞོ།	दही

ཞ་ ཞ་ ཞ་

ཟ་

ཟམ་པོ།

पुल

ཟ་ ལས་ ཟམ་པོ།
ཞིང་གི་ ཟམ་པོ།
ཞིང་གི་ ཟམ་པོ
ཆུང་ཆུང་ འདུག།

ཟོ་ཙག།	सिस्नु	ཟམ།	खाना	གཟིག།	चितुवा

ཟ་ ཟ་ ཟ་

འ་

འཇའ།

इन्द्रेणी

གཟིགས་ཅི་ གྲོགས་ཀོ་ གནམ་ཁ་
གཟིགས་ཅི་ གྲོགས་ཀོ་ གནམ་ཁ།
གནམ་ལོ་ ཉི་མ་ ཤར་ འདུག།
ཆབ་ དང་ ཉི་མའི་ བར་ན།
མཛེས་པའི་ འཇའ་ཅིག་ ཐུག་ འདུག།

འ་ཉག།	नेवला	འུག་ཀོ།	उल्लू	མདའ།	तीर

འ་ འ་ འ་

ཡ་

ཡང་གུད།

फर्सी

ཡ་ ལས་ ཡང་གུད།
ཡང་གུད་ སེར་པོ།
ཡང་གུད་ཀྱི་ ཚོདམ།
ཞིམ་པོ་ ཐོན་ཤད་ ཨིན།

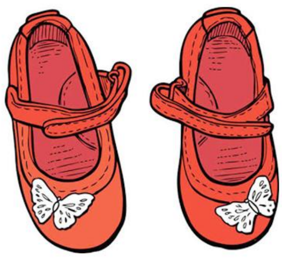

ཡུང་དཀར།	तोरी	ཡ་གཉིས།	जोड़ी	གཡག།	चौंरी

ཡ་ ཡ་ ཡ་

ར་

རི་བོང་།

खरायो

ར་ ལས་ རི་བོང་།
རི་བོང་ ཆུང་ཆུང་།
དོང་ ནང་ལོ་,
འཛུལ་ བཞིན་འདུག།

རམ།	बाख्रो	མར།	घिउ	ཟླ་དཀར།	जुन

ར་ ར་ ར་

ལ་

ལག་ཀཽ།

हात

ལ་ ལས་ ལག་ཀཽ།
ལག་ཀཽ་ གཉིས་པཽ།
ལག་ཀཽ་ རེ་ན,
མཛུབ་མཽ་ ལྔ་ལྔ་ ཡཽད།

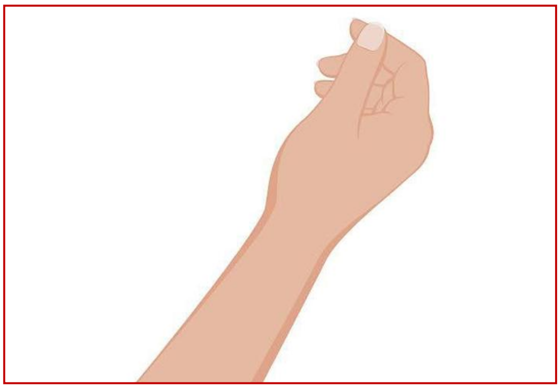

ལ་ཕུག།	मूला	རྒྱལ་པཽ།	राजा	རུས་སྦལ།	कछुवा

ལ་ ལ་ ལ་

ཤ་

ཤིང་སྡོང་།

रूख

ཤ་ ལས་ ཤིང་སྡོང་།
ཤིང་སྡོང་ སྔེང་ལོ,
ཤིང་སྡོང་ སྔེང་ལོ།
ཨོ་ལག་ གཉིས་ འདུག།

ཤ་མོག།	च्याउ	མིག་ཤེལ།	चस्मा	ཁ་ཤ།	मृग

ཤ་ ཤ་ ཤ་

ས་

སོ་མག།

काङ्यो

ས་ལས་ སོ་མག།
སོ་མག་གིས་,
ཊྲོ་པ་ སྐྱོང་སྟི།
མགོ་ཤད་ཏོ་ ཨིན།

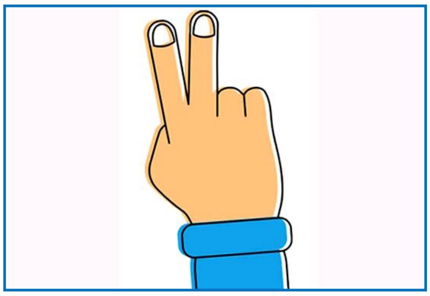

སེམས་ཅན།	जनावर	གསུམ།	तीन	གཉིས།	दुई

ས་	ས་	ས་	

ཧ་

ཧུང་པོ།

बादल

ཧ་ ལས་ ཧུང་པོ།
གནམ་ལོ་ ཧུང་པོ།
ཧུང་པོ་ དཀར་པོ།
ཡལ་ བཞིན་ འདུག།

ཧམ་པོ།	ढुसी	ཧ་ཧ།	हाँसो	མ་ཧེ།	भैंसी

ཧ་ ཧ་ ཧ་

ཨ་

ཨ་ལུས།

बिरालो

ཨ་ ལས་ ཨ་ལུས།
ཨ་ལུས་ ཆུང་ཆུང་།
ཨ་ལུས་ཀྱི་ བྱི་ཙི།
འདའ་ བཞིན་ འདུག།

ཨ་གར།	खोर्सानी	ཨོམ།	दुध	ཨམ།	आमा

ཨ་ཡི།	དཔེར་ན།	པར།
◌ི	གཅིག།	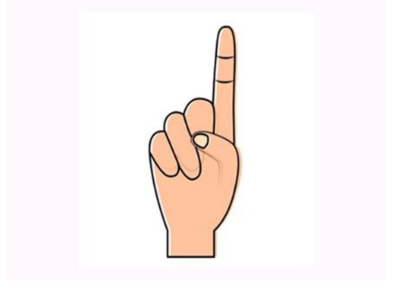
◌ུ	ཆུ།	
◌ེ	དེབ།	
◌ོ	ཨོ་ལག།	

ཨང་གི་ ༡ གཅིག་ ལས་ ༢༠ ཉི་ཤུ།

༡	གཅིག།		1
༢	གཉིས།		2
༣	གསུམ།		3
༤	བཞི།		4
༥	ལྔ།		5
༦	དྲུག།		6
༧	བདུན།		7
༨	བརྒྱད།		8
༩	དགུ།		9
༡༠	བཅུ་ ཐམ་པ།		10

༡༡	བཅུ་གཅིག།		11
༡༢	བཅུ་གཉིས།		12
༡༣	བཅུ་གསུམ།		13
༡༤	བཅུ་བཞི།		14
༡༥	བཅོ་ལྔ།		15
༡༦	བཅུ་དྲུག།		16
༡༧	བཅུ་བདུན།		17
༡༨	བཅོ་བརྒྱད།		18
༡༩	བཅུ་དགུ།		19
༢༠	ཉི་ཤུ་ ཐམ་པ།		20

འོག་གི་ ཨང་གི་ བྲི།:

༡	༡	༡	༡	
༢	༢	༢	༢	
༣	༣	༣	༣	
༤	༤	༤	༤	
༥	༥	༥	༥	
༦	༦	༦	༦	
༧	༧	༧	༧	
༨	༨	༨	༨	
༩	༩	༩	༩	
༡༠	༡༠	༡༠	༡༠	

༡༡	༡༡	༡༡	༡༡	
༡༢	༡༢	༡༢	༡༢	
༡༣	༡༣	༡༣	༡༣	
༡༤	༡༤	༡༤	༡༤	
༡༥	༡༥	༡༥	༡༥	
༡༦	༡༦	༡༦	༡༦	
༡༧	༡༧	༡༧	༡༧	
༡༨	༡༨	༡༨	༡༨	
༡༩	༡༩	༡༩	༡༩	
༢༠	༢༠	༢༠	༢༠	

ལྷོ་ཡིག་ ཀ་དཔེ་ དང་པོ།

(नेपाली वर्णमाला)

अ आ इ ई

उ ऊ ऋ

ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in